ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

3-08-2026

बापदादा का मुख्य फरमान है निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म से पवित्र बनो। संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र। संकल्प में भी अगर पुराने अशुद्ध संस्कार टच करते हैं, व्यर्थ संकल्प चलते हैं या स्वप्न आते हैं तो भी सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहेंगे इसलिए पवित्र भव व योगी भव के पहले पाठ को स्वंय में लाओ तब ही बाप-समान और बाप के समीप आने के अधिकारी बन सकते हो।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

BapDada's main order is to stay constantly in remembrance and to remain pure in your thoughts, words and deeds. Not to have any impurity or uncleanliness, even in your thoughts, is to have complete purity. If your thoughts are touched by old, impure sanskars or you have waste thoughts or they come in your dreams, then this is not said to be complete purity. Therefore, put the first lesson of: May you be pure and may you be yogi, into practice, for only then will you become equal to the Father and claim a right to come close to the Father.